



INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 6; 2025; Page No. 243-249

Received: 01-09-2025

Accepted: 06-10-2025

Published: 18-11-2025

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महिला स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा निभाई गई भूमिका का पता लगाना

¹Ashwini Kumar Singh and ²Dr. Alok Kumar Pandey

¹Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur, Madhya Pradesh, India

²Associate Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur, Madhya Pradesh, India

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.22642149>

Corresponding Author: Ashwini Kumar Singh

सारांश

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी 1817 से ही शुरू हो गई थी। भीमा बाई होल्कर ने ब्रिटिश कर्नल 'मैल्कम' के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी और उसे गुरिल्ला युद्ध में हराया। सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, विजयलक्ष्मी पंडित और 20वीं सदी में एनी बेसेंट ऐसे नाम हैं जिन्हें युद्ध के मैदान और राजनीतिक क्षेत्र दोनों में उनके अद्वितीय योगदान के लिए आज भी याद किया जाता है। स्वतंत्रता-पूर्व काल में देश में महिलाओं की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कई महिलाओं ने वीरतापूर्ण भूमिका निभाई। हजारों भारतीय महिलाओं ने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

मूलशब्द: भारत, स्वतंत्रता, आंदोलन, महिला, और भारतीय।

प्रस्तावना

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी 1817 में ही शुरू हो गई थी। भीमा बाई होल्कर ने ब्रिटिश कर्नल मैल्कम के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी और गुरिल्ला युद्ध में उसे हराया। इसमें किचूर की रानी चन्नामा सहित कई महिलाएं शामिल थीं। अवध की रानी हजरत महल ने 19वीं सदी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। यह लड़ाई 1557 के पहले स्वतंत्रता संग्राम से 30 साल पहले की है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका सराहनीय थी और विद्रोह के नेताओं ने भी इसकी प्रशंसा की थी। रामगढ़ की रानी, रानी इंडियन कौर, रानी तास बाई, चौहान रानी, तपसौनी महारानी ने वीरतापूर्वक अपने सैनिकों का नेतृत्व किया और शानदार नेतृत्व ने सच्ची देशभक्ति का एक असाधारण उदाहरण पेश किया।

देश में स्वतंत्रता संग्राम के समय महिलाएँ पीछे नहीं रहीं। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका बहुत बड़ी है और उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया। यूनिट में शामिल महिलाओं को भी पुरुषों की तरह ही तत्परता का अहसास था। फिर भी उनकी वर्दी पुरुष योद्धाओं से लगभग मिलती-जुलती थी। उन महान महिलाओं की सूची, जिनके नाम भारत के स्वतंत्रता संग्राम के

प्रशासन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और अटूट समर्पण के लिए हमेशा याद किए जाएंगे।

स्वतंत्रता-पूर्व काल में देश में महिलाओं की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। इसका मुख्य कारण था, पुरुष प्रधानता का प्रचलन। महिलाओं की मुख्य जिम्मेदारी घर के कामों को पूरा करने तक ही सीमित थी और उन्हें अन्य कार्यों और गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति नहीं थी, उन्हें अपने विचार और दृष्टिकोण को व्यक्त करने की अनुमति नहीं थी। इस काल में कई ऐसी प्रथाएँ लागू की गईं, जिनका महिलाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। इनमें बाल विवाह, विधवा विवाह पर प्रतिबंध, कन्या भ्रूण हत्या, कन्या भ्रूण हत्या, पर्दा प्रथा, सती प्रथा और बहुविवाह शामिल हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले देश में महिलाओं की स्थिति बहुत ही खराब थी। इसका मुख्य कारण था, पुरुष प्रधानता का प्रचलन। महिलाओं का काम केवल घर के काम करना था, उन्हें अन्य कामों या गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति नहीं थी, उन्हें अपने विचार और दृष्टिकोण व्यक्त करने की अनुमति नहीं थी। इस दौरान कई ऐसी व्यवस्थाएँ लागू की गईं, जिनका महिलाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। इनमें बाल विवाह, विधवा विवाह पर प्रतिबंध शामिल हैं।

भारत में महिलाओं की स्थिति में पूरे इतिहास में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जो विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारकों द्वारा आकार लेते हैं। वैदिक काल के प्रतिष्ठित विद्वानों से लेकर ब्रिटिश भारत के हाशिए पर पड़े नागरिकों तक, महिलाओं के अनुभवों को सशक्तीकरण और अशक्तीकरण के दौर से चिह्नित किया गया है। यह अध्ययन भारत में महिलाओं की स्थिति के विकास की खोज करता है, वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 500 ईसा पूर्व), ब्रिटिश शासन (1757-1947) से जटिल ऐतिहासिक प्रक्षेपवक्र का पता लगाता है।

वैदिक काल, जिसे अक्सर हिंदू सभ्यता का "स्वर्ण युग" माना जाता है, में महिलाओं ने अनुष्ठानिक बलिदानों में सक्रिय रूप से भाग लिया, संपत्ति के अधिकार रखे और बौद्धिक गतिविधियों में भाग लिया। हालाँकि, बाद के काल में महिलाओं की स्वायत्तता में गिरावट देखी गई, जिसमें पितृसत्तात्मक मानदंडों का क्रमिक सुदृढ़ीकरण हुआ। मुस्लिम शासन के आगमन ने नई सामाजिक और सांस्कृतिक प्रथाओं की शुरुआत की, जिससे महिलाओं की स्वतंत्रता और भी सीमित हो गई। ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने अपनी शोषणकारी आर्थिक नीतियों और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के साथ महिलाओं की स्थिति में गिरावट को और बढ़ा दिया। इस अध्ययन का उद्देश्य भारत में महिलाओं की स्थिति के परिवर्तन में योगदान देने वाले कारकों का एक व्यापक ऐतिहासिक विश्लेषण प्रदान करना है। सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक ताकतों के बीच परस्पर क्रिया की जाँच करके, यह शोध भारत में महिलाओं के अनुभवों के विकास में अंतर्निहित जटिल गतिशीलता को समझने का प्रयास करता है।

साहित्य समीक्षा

भारत का स्वतंत्रता आंदोलन विभिन्न क्षेत्रों में चरम पर था, जिसके परिणामस्वरूप ऐतिहासिक घटनाएँ हुईं, जिससे ब्रिटिश शासन समाप्त हो गया। यह आंदोलन 1857 में शुरू हुआ और 1947 ई. तक चला। भारतीय राष्ट्र को अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखना चाहिए। ब्रिटिश शासन की आड़, जो कभी हिंसक रूप से लड़ती थी, कभी अन्यायपूर्ण तरीके से, ताकि सभी लोग पीढ़ियों से अपने जन्मसिद्ध अधिकार को दबा सकें, आखिरकार बहुत प्रयास के बाद गिर गई। इसलिए, इस देश की स्वतंत्रता इसके लोगों द्वारा अभूतपूर्व तरीके से जीती गई। स्वतंत्रता संग्राम में समाज के हर वर्ग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालाँकि, इस प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी भी कम महत्वपूर्ण नहीं थी, और वे भी आगे बढ़कर नेता बनकर खेल-परिवर्तक बन गईं। इस लेख में, स्वतंत्रता के संघर्ष में महिलाओं के योगदान पर ध्यान केंद्रित किया गया है। महिलाओं द्वारा किए गए बलिदान स्वतंत्रता की राह में सबसे महत्वपूर्ण बाधा का प्रतिनिधित्व करते हैं। द्वितीयक डेटा का विश्लेषण पाठ्य दृष्टिकोण के माध्यम से किया गया है। मिश्रा, वसुन्धरा एवं अन्य। (2023) [1]।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास महिलाओं के योगदान का उल्लेख किए बिना अधूरा होगा। भारत की महिलाओं द्वारा किए गए बलिदान को सर्वोच्च स्थान दिया जाएगा। उन्होंने सच्ची भावना और अदम्य साहस के साथ लड़ाई लड़ी और हमें आजादी दिलाने के लिए विभिन्न यातनाओं, शोषण और कठिनाइयों का सामना किया। जब अधिकांश पुरुष स्वतंत्रता सेनानी जेल में थे, तब महिलाएं आगे आईं और संघर्ष की कमान संभाली। भारत की सेवा के लिए अपने समर्पण और अटूट निष्ठा के लिए इतिहास में जिन महान महिलाओं के नाम दर्ज हैं, उनकी सूची बहुत लंबी है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी 1817 की शुरुआत

में ही शुरू हो गई थी। भीमा बाई होल्कर ने ब्रिटिश कर्नल मैल्कम के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी और उसे गुरिल्ला युद्ध में हराया। गनी, ज़ाहिद एट अल. (2020) [2]।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भागीदारी देखी गई, जिन्होंने औपनिवेशिक शासन का विरोध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह शोध लेख मध्य कर्नाटक की महिलाओं के योगदान पर केंद्रित है, जिसमें उनके प्रयासों, बलिदानों और स्वतंत्रता के संघर्ष में उनकी भागीदारी के सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है। इस विशिष्ट क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करके, अध्ययन कम ज्ञात आख्यान को उजागर करने और राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी में क्षेत्रीय विविधता पर जोर देने का प्रयास करता है। मध्य कर्नाटक, जिसे अक्सर मुख्यधारा के ऐतिहासिक विवरणों में अनदेखा किया जाता है, ने महिलाओं की व्यापक भागीदारी देखी, जिन्होंने काफी चुनौतियों का सामना करने के बावजूद स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लेख रानी अब्बक्का चौटा और कमलादेवी चट्टोपाध्याय जैसी प्रमुख महिला हस्तियों की भूमिकाओं का पता लगाता है, जिन्होंने प्रतिरोध प्रयासों का नेतृत्व किया, विरोध प्रदर्शन आयोजित किए और अपने समुदायों को औपनिवेशिक शासन के खिलाफ लड़ाई में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। एन., मल्लैया. (2021) [3]. शंकर, बिकलेंदु और अन्य। (2023) [4]।

महिलाओं ने भारत की स्वतंत्रता के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विरोध प्रदर्शनों में शामिल होने के लिए अपने घरों से बाहर निकलीं, गिरफ्तारियाँ झेलीं और क्रूरताओं सहित कठिनाइयों का सामना किया। उनके योगदान ने न केवल आंदोलन को ऊर्जा दी बल्कि स्वतंत्रता के संघर्ष पर एक स्थायी प्रभाव भी छोड़ा। राष्ट्रीय आंदोलनों में महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। उन्होंने उल्लेखनीय भावना और साहस के साथ लड़ाई लड़ी, स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्र जागरण दोनों में एक अविश्वसनीय और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिलाओं ने न केवल अपने जीवन का बलिदान दिया, बल्कि कई चुनौतियों का भी सामना किया। इसका एक उदाहरण रानी लक्ष्मी बाई हैं, जो एक निडर नेता थीं, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश शासन के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी। भारत में महिलाओं ने असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आदि जैसे प्रमुख आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेकर स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अगर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं के योगदान को स्वीकार नहीं किया जाता है, तो संघर्ष अपना महत्व खो देगा। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं द्वारा किए गए बलिदान को प्राथमिकता दी जाती है। स्वतंत्रता संग्राम के दौर में महिलाओं के त्याग, निस्वार्थता और बहादुरी की कहानियाँ भरी पड़ी हैं। हममें से बहुतों को यह पता नहीं था कि दूसरे विश्व युद्ध में सैकड़ों महिलाओं ने अपने पुरुष साथियों के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी थी। अदम्य साहस और जुनून के साथ, उन्होंने अंत तक लड़ाई लड़ी। भारतीय महिलाओं ने कई तरह की सामाजिक बाधाओं को तोड़ दिया और घर से जुड़ी पारंपरिक भूमिकाओं और जिम्मेदारियों से खुद को दूर कर लिया। भट, रशीद. (2022) [5]।

भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी

स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाली सभी महिलाओं की पहचान करना अविश्वसनीय रूप से चुनौतीपूर्ण है, और उनमें से एक चुनिंदा समूह को अलग करना भी उतना ही चुनौतीपूर्ण है।

- **सरोजिनी नायडू:** उन्हें 'भारत की कोकिला' के नाम से भी जाना जाता है। वह एक प्रतिष्ठित कवि, प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और एक महान वक्ता थीं। वह 1917 के आसपास प्रमुख राष्ट्रवादी के रूप में उभरीं। वह 1925 में कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली दूसरी महिला थीं। वह 1905 में बंगाल के विभाजन के विरोध में राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल हुईं। नमक सत्याग्रह के दौरान, वह धरसाना नमक कारखाने में महिला प्रदर्शनकारियों में से एक थीं।
- **रानी लक्ष्मी बाई:** झांसी की रानी के नाम से मशहूर भारतीय इतिहास में रानी लक्ष्मी बाई जैसी बहादुर और शक्तिशाली महिला योद्धा अभी तक नहीं देखी गई है। वह देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव का एक शानदार उदाहरण हैं। वह बहुत से लोगों के लिए प्रेरणा और प्रशंसा का विषय हैं। अंग्रेजों के साथ अपने टकराव में, वह साहस, देशभक्ति, स्वाभिमान, दृढ़ता और उदारता की प्रतीक थीं। झांसी की रानी 1857 के भारतीय विद्रोह में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थीं। इस प्रकार उनका नाम भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है।
- **बेगम हज़रत महल:** प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, बेगम हज़रत महल, जिन्हें अक्सर 'अवध की बेगम' के नाम से जाना जाता है, पहली महिला स्वतंत्रता योद्धा थीं। वह प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक प्रमुख व्यक्ति थीं, जिन्होंने ब्रिटिश सैनिकों के खिलाफ अन्य क्रांतिकारियों के साथ लड़ाई लड़ी थी। हालाँकि, ब्रिटिश सैनिकों ने अवध पर फिर से आक्रमण किया और एक लंबी घेराबंदी के बाद इसे वापस लेने में सफल रहे, जिससे उन्हें भागने पर मजबूर होना पड़ा।
- **रानी वेलु नचियार:** "वीरा मंगई" (बहादुर महिला) के नाम से मशहूर, देश में ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ लड़ने वाली पहली रानी थीं। उन्हें युद्ध के हथियारों के इस्तेमाल, मार्शल आर्ट और घुड़सवारी का प्रशिक्षण दिया गया था। हैदर अली और गोपाल नायकर के साथ मिलकर उन्होंने अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी। 5000 कर्मियों की सेना के साथ योद्धा रानी ने अंग्रेजों को कड़ी टक्कर दी। कमलादेवी
- **चट्टोपाध्याय:** 1930 के दशक में उन्होंने नमक सत्याग्रह में भाग लिया। उन्होंने हस्तशिल्प, हथकरघा और रंगमंच को बढ़ावा दिया। भारत सरकार ने उन्हें 1955 में पद्म भूषण और 1987 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया।
- **एनी बसंत:** वह 1917 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली अध्यक्ष बनीं। एनी बेसेंट एक महान और साहसी महिला थीं, जिन्हें स्वतंत्रता सेनानी का खिताब दिया गया है क्योंकि उन्होंने लोगों को उनकी वास्तविक स्वतंत्रता दिलाने में मदद करने के लिए कई युद्ध लड़े। वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गहराई से शामिल थीं और भारत को एक स्वतंत्र देश बनाने के लिए अपना अभियान जारी रखा। वह भारतीय लोगों की संस्कृति, परंपरा से प्यार करती थीं
- **अरुणा आसफ अली:** एक भारतीय शिक्षिका, राजनीतिक कार्यकर्ता और प्रकाशक थीं। अरुणा कांग्रेस पार्टी की सक्रिय सदस्य थीं। उन्होंने नमक सत्याग्रह के दौरान सार्वजनिक जुलूसों में भाग लिया था। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मासिक पत्रिका 'इंकलाब' का संपादन किया। उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन की ग्रैंड ओल्ड लेडी के रूप में जाना जाता है। उन्हें भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बॉम्बे में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का झंडा फहराने के लिए जाना जाता है।
- **विजयलक्ष्मी पंडित:** श्रीमती पंडित को 1932, 1940 और 1942 में तीन बार राष्ट्रवादी गतिविधियों के लिए जेल भेजा गया था। नमक सत्याग्रह के दौरान उन्होंने जुलूसों का नेतृत्व किया और अपनी बहन और अपनी छोटी बेटियों के साथ शराब और विदेशी कपड़े बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया। उन्होंने भारत में महिलाओं के लिए कई लड़ाइयाँ लड़ीं और कई अवरोधों को तोड़ा। दुर्गाबाई देशमुख: नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए उन्हें तीन साल की कैद हुई।
- **मृदुला साराबाई:** विभाजन के दौरान उन्होंने भीड़ द्वारा अपहृत लड़कियों को बचाने और हिंदू और मुस्लिम दोनों शरणार्थियों को चोट लगने या मारे जाने से बचाने के लिए बहुत बड़ा व्यक्तिगत जोखिम उठाया। 1934 में उन्हें गुजरात से एक प्रतिनिधि के रूप में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के लिए चुना गया था।
- **बसंती दास:** वह भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता थीं। उन्होंने विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने स्वयं स्वतंत्रता गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाई और असहयोग आंदोलन के दौरान उन्हें गिरफ्तार भी किया गया। उन्हें 1973 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।
- **सुचेता कृपलानी:** 1932 में, उन्होंने एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया और 1939 में राजनीति में प्रवेश किया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गईं। 1940 में, उन्होंने फैजाबाद में व्यक्तिगत सत्याग्रह की पेशकश की और दो साल के लिए जेल गईं। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, वह भूमिगत हो गईं और गुप्त रूप से ब्रिटिश विरोधी प्रतिरोध को संगठित करने में उल्लेखनीय सेवा प्रदान की।
- **कमला दास गुप्ता:** वह भारतीय महिला स्वतंत्रता सेनानियों में एक शानदार व्यक्तित्व रही हैं। वह उग्रवादी वर्ग से संबंधित थीं और 'युगांतर पार्टी' की सक्रिय सदस्य थीं। 1942 में उन्हें भारत छोड़ो आंदोलन के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया और प्रेसीडेंसी जेल में रखा गया।
- **डॉ. एस. मुखलक्ष्मी रेड्डी:** वह पहली भारतीय महिला थीं जिन्हें समाज सेवा और चिकित्सा के क्षेत्र में उनकी योग्यता और सेवाओं के लिए 1926 में मद्रास विधान सभा के लिए नामित किया गया था। नमक सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन के दौरान महिलाओं पर अत्याचार और महिला आंदोलनकारियों के खिलाफ दमनकारी उपायों के इस्तेमाल के विरोध में, उन्होंने अपने कार्यालयों से इस्तीफा दे दिया और स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं।
- **मारिेट कजिन्स:** आयरलैंड में महिलाओं के लिए वोटिंग अधिकार की लड़ाई लड़ने के बाद एक आयरिश महिला योद्धा अपने पति के साथ भारत आई और भारतीय महिलाओं के लिए उन्हीं मुद्दों की वकालत करती है। उन्होंने एनी बेसेंट और सरोजिनी नायडू के साथ हाथ मिलाया और महिलाओं के बीच जागरूकता लाने के लिए कई महिला संघों की स्थापना में मदद की।
- **राज कुमार अमृत कौर:** वह कपूरथला के शासक घराने से ताल्लुक रखती हैं। वह गांधीजी से प्रेरित थीं और नमक सत्याग्रह के दौरान कांग्रेस में शामिल हो गईं। उन्हें बॉम्बे में गिरफ्तार किया गया क्योंकि गांधीजी कहते थे कि भारत की पूर्ण स्वतंत्रता तब तक संभव नहीं है जब तक कि हमारी बेटियाँ स्वतंत्रता की लड़ाई में बेटों के साथ कंधे से कंधा

मिलाकर खड़ी न हों और इसके लिए उन्हें अपनी शक्ति का एहसास होना चाहिए।

- **इंदिरा गांधी:** आधुनिक भारत की असाधारण महिलाओं में से एक। वे 1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्य बनीं। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के साथ ही उनकी सार्वजनिक गतिविधियों ने एक नए चरण में प्रवेश किया। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास चलाने की जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने अल्पसंख्यकों की सामाजिक और आर्थिक उन्नति के लिए अथक प्रयास किए।

सविनय अवज्ञा और दांडी नमक मार्च में महिलाओं की भागीदारी

विधानमंडल के कांग्रेस सदस्यों को चुनावों का बहिष्कार करने का निर्देश दिया गया और 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस घोषित किया गया, जिसे हर साल पूरे देश में मनाया जाना था। गांधीजी को किसी भी तरह से सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने का अधिकार दिया गया था, जिसे वे सबसे अच्छा मानते थे। गांधीजी ने नमक कानून तोड़ने को गुरुत्वाकर्षण के केंद्र के रूप में चुना। उन्हें लगा कि चूंकि नमक आम इस्तेमाल की चीज है, इसलिए नमक कर देश के गरीबों के लिए अन्यायपूर्ण था। बड़े स्वतंत्रता आंदोलन के एक भाग के रूप में, गांधी ने जनवरी 1930 में ब्रिटिश सरकार द्वारा नमक पर लगाए गए व्यापार मॉडल और कर को समाप्त करने की मांग की। लगभग एक महीने बाद, गांधी ने घोषणा की कि वह अवैध रूप से नमक बनाने के लिए समुद्र तट के किनारे स्थित शहर दांडी तक पैदल चलेंगे। गुजरात के कस्बों से होकर प्रसिद्ध दांडी पदयात्रा पर, गांधीजी ने 70 शांत, गैर-हिंसक विरोधियों (सत्याग्रह) के साथ शुरुआत की।

सरोजिनी नायडू

कवयित्री, राजनीतिज्ञ और शांतिदूत के रूप में मशहूर सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी, 1879 को हैदराबाद में हुआ था। उनके पिता डॉ. अघोनाथ चट्टोपाध्याय एक बंगाली सज्जन थे, जो निज़ाम कॉलेज के संस्थापक थे और अपनी मृत्यु तक शिक्षा के क्षेत्र में कड़ी मेहनत करते रहे। वे एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक थे। हैदराबाद में मैट्रिक करने के बाद, सरोजिनी को निज़ाम द्वारा दी गई छात्रवृत्ति पर उच्च अध्ययन के लिए 1895 में इंग्लैंड भेजा गया था। उन्होंने किंग्स कॉलेज, लंदन और फिर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के गिर्टन कॉलेज में अध्ययन किया। वह खराब स्वास्थ्य के कारण अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख सकीं और 1898 में भारत वापस आ गईं।

श्रीमती नायडू ने 1909 में बम्बई के बयरामजी जीजाबाई संस्थान में विद्यार्थियों से अपील की थी कि, "आधुनिक भावना का सर्वोच्च आदर्श, चरमोत्कर्ष भारत की जातियों का एकीकरण होना चाहिए, एकता, जो समान शिक्षा के पारस्परिक प्रयास, निःस्वार्थ श्रम, प्राचीन बाधाओं को तोड़ने, प्राचीन घृणा को समाप्त करने और समान भाईचारे की मान्यता की हो, जो हिंदुओं और मुसलमानों को, मुसलमानों को पारसियों से और पारसियों को ईसाइयों से जोड़ती है।

उसी वर्ष उन्होंने समाज सेवा सम्मेलन में भाग लिया और हिंदू विधवाओं की सुरक्षा के लिए एक प्रस्ताव पेश किया। बाद में उन्होंने महिलाओं की शिक्षा पर भी बात की। उन्होंने कहा, "जब तक वे इस देश में गिरी हुई महिलाओं को नहीं उठाते और उनकी आवाज़ नहीं उठाते, तब तक भारत का उद्धार केवल एक दूर का सपना है।"

श्रीमती नायडू पहली बार राजनीतिक मंच पर "हिंदू मुस्लिम एकता के राजदूत" के रूप में 1913 में दिखाई दीं, जब उन्होंने मुस्लिम लीग के अधिवेशन में भाग लिया और उसे संबोधित किया। तीन साल बाद, 1916 में, श्रीमती नायडू ने कांग्रेस के मंच से स्वशासन पर प्रस्ताव को प्रायोजित करते हुए भाषण दिया। उसके बाद से उन्होंने देश के राजनीतिक जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाई। इसके बाद का समय कठिनाइयों से भरा था और इस तरह उन लोगों के लिए निरंतर गतिविधियाँ थीं जो मातृभूमि की सेवा करने के लिए दृढ़ थे।

कमला देवी चट्टोपाध्याय

श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय इस समय की एक और महिला हैं जिन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए असाधारण कार्य किया। कमला देवी का जन्म 1903 में मैंगलोर में हुआ था और जब वह स्कूल में थीं, तब उनका विवाह हुआ था। उनके पति की मृत्यु हो गई और कमला एक बच्ची बन गईं। उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी जो उस समय के रीति-रिवाजों के विपरीत थी और बाद में मद्रास के क्वीन मैरी कॉलेज में दाखिला लिया।

1929 में अहमदाबाद में युवा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कमला देवी ने शिकायत की कि "हम खुद को शहादत के लिए तैयार रखने के बहुत शौकीन हैं, लेकिन जब हमारी गर्दन खोलने का समय आता है तो हम पीछे हट जाते हैं और कहते हैं कि अगले वार तक इंतजार करें। हर बार कायरता ही हावी हो जाती है। सविनय अवज्ञा शुरू करें, स्वतंत्र गणराज्य की घोषणा करें, समानांतर सरकार स्थापित करें, इसे किसी भी कीमत पर करें। जब पुलिस ने बॉम्बे के कांग्रेस भवन पर छापा मारा तो कमला देवी ने निष्क्रिय प्रतिरोध किया और नमक के बर्तनों की रखवाली की। उन्होंने सार्वजनिक रूप से नमक बनाया और उसे खुले बाजार में बेचा। उन्होंने नमक बेचने के लिए हाई कोर्ट परिसर को भी चुना। नमक ऊंचे दामों पर बेचा गया।

सरोजिनी नायडू को धरसाना साल्ट वर्क्स पर छापा मारने का सौभाग्य मिला था, लेकिन धरसाना साल्ट वर्क्स पर छापा मारने की योजना बनाने का काम कमला देवी को मिला; बॉम्बे शहर के परिसर में नमक के खेतों पर छापा मारने की योजना बनाने का काम कमला देवी को मिला। इससे पहले कि वह अपना सपना पूरा कर पाती, उसे गिरफ्तार कर लिया गया। लोगों को उनका अंतिम संदेश था; "जब तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद अतीत की एक काली छाया न बन जाए, तब तक लड़ाई जारी रखो; भारत की स्वतंत्रता विश्व स्वतंत्रता के द्वार खोलेगी।"

भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

भारत छोड़ो आंदोलन (1942) अगस्त 1942 में भारत छोड़ने का प्रयास शुरू हुआ। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, गांधी ने कई आंदोलनों का नेतृत्व किया, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध और सफल 1942 का विद्रोह था, जिसे अक्सर 1942 की अगस्त क्रांति के रूप में जाना जाता है। 1942 के भारत छोड़ो अभियान में महिलाओं को कई तरह से शामिल किया गया था, जिसने इसे उल्लेखनीय बना दिया। महात्मा गांधी के "करो या मरो" अल्टीमेटम ने सभी भारतीय महिलाओं को जीवन का एक नया अनुभव दिया। पूरे अभियान के दौरान, महिलाओं ने प्रदर्शनों में भाग लिया, विरोध प्रदर्शन किए, विस्फोटक बनाए और ले गए, सार्वजनिक व्याख्यान दिए और "नेतृत्वहीन आंदोलन के रूप में सड़कों पर उतरीं, जिसमें अधिकांश पुरुष सलाखों के पीछे थे।" भारतीय स्वतंत्रता के

लिए संघर्ष ने भारतीय महिलाओं को मुक्ति समूहों की एक नई लहर के सामने उजागर किया।

कस्तूरबा गांधी एक राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में, कस्तूरबा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता और नागरिक अधिकारों के लिए आंदोलन में भाग लिया। वह अपने पति के साथ सभी प्रदर्शनों और रैलियों में जाती थीं, और जब वह वहां नहीं होते थे, तो वह उनके लिए खड़ी भी होती थीं। उन्होंने भारतीयों को पढ़ना, लिखना, अनुशासन, स्वास्थ्य और स्वच्छता के सिद्धांत सिखाने का काम संभाला क्योंकि किसी को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिली थी। पर्दे के पीछे, उन्होंने स्वतंत्रता अभियान में एक बड़ी भूमिका निभाई।

उत्तर प्रदेश

सरकार द्वारा अपनाए गए दमनकारी कदमों के बाद पुलिस ने कांग्रेस कार्यालय पर कब्जा कर लिया। 10 अगस्त 1942 को छात्रों के एक समूह ने कार्यालय पर धावा बोलकर उसे अपने कब्जे में ले लिया।

छात्रों के जत्थे जिलों में घूमे और लोगों को हरसंभव मदद और राहत पहुंचाई। प्रतिष्ठित हिंदू परिवारों की महिलाओं को संगीनों की नौक पर घर से निकलने को कहा गया, जिनमें नवजात शिशुओं की माएं भी शामिल थीं। उनसे उनके गहने उतारने को कहा गया। कुछ मामलों में तो उनके शरीर से जबरन गहने उतार लिए गए। गाजीपुर जिले के समनवाल गांव में एक अहीर महिला को उस समय गोली मार दी गई जब वह सैनिकों से बचकर भाग रही थी।

पंजाब

पंजाब ने महात्मा गांधी के आह्वान पर पूरी ताकत से प्रतिक्रिया दी - छात्र, लड़के और लड़कियां दोनों ही, बिना किसी हिचकिचाहट के मैदान में आगे आए। 10 नवंबर, 1942 को लाहौर शहर में एक सौ चार छात्रों को गिरफ्तार किया गया। इसमें बाईस लड़कियां शामिल थीं। लड़कियां साहसी थीं, उन्होंने बैज बांटे। लड़कियों ने पुलिस की मौजूदगी पर भी ध्यान नहीं दिया और जब तक उनके प्रिंसिपल ने उन्हें ऐसा करने के लिए नहीं कहा, तब तक वे पुलिस वैन में नहीं बैठीं।

राजकुंअरी अमृत कौर

आंदोलन के दौरान राजकुमारी अमृत कौर ने जुलूस और विरोध सभाओं के आयोजन में अग्रणी भूमिका निभाई। राजकुमारी कपूरथला राज्य के शाही परिवार से थीं। वह सर हरनाम सिंह की बेटी थीं और उनका जन्म 1886 में लखनऊ, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनकी माँ अग्रणी सामाजिक कार्यकर्ताओं में से एक थीं और बेटी ने न केवल सामाजिक स्वतंत्रता के लिए बल्कि देश की राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए भी लड़ना सीखा। अमृत कौर ने अपनी अधिकांश शिक्षा इंग्लैंड में प्राप्त की और वह एक उत्साही खिलाड़ी थीं।

राजकुमारी ने नमक सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया और उन्हें बंबई में गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में जब सांप्रदायिक निर्णय की घोषणा की गई, तो उन्होंने इसकी निंदा की और 23 दिसंबर, 1932 को आयोजित अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्ताव पेश किया: "यह सम्मेलन (i) भारत की नारीत्व को प्रभावित करने वाले सांप्रदायिक निर्णय के विरोध में और (ii) संयुक्त निर्वाचन प्रणाली की अपनी मांग में एकजुट है।" 11 राजकुमारी कांग्रेस के पक्ष में वकालत करने के लिए

उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत के बन्नी गई। 16 जुलाई, 1937 को सहायक आयुक्त, बन्नी ने उन्हें राजद्रोह के आरोप में दोषी ठहराया और न्यायालय उठने तक कारावास और पचास रुपये जुर्माना भरने की सजा सुनाई।

अमर कौर

अमर कौर, गुरदासपुर के एक वकील मोहन लाल की पत्नी थीं, जिन्होंने 1921 में गांधीजी के आह्वान पर अपनी वकालत छोड़ दी थी, उसी समय सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। अगले वर्ष अमर कौर अपने पति के साथ लायलपुर चली गईं और अपना असली राजनीतिक काम शुरू किया। 1940 में गांधीजी द्वारा शुरू की गई व्यक्तिगत सत्याग्रह की नीति का पालन करते हुए अमर कौर ने लाहौर जिले के कसूर में सत्याग्रह किया। उन्हें जेल से रिहा किया गया, लेकिन सितंबर 1942 में उन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। इस दौरान उन्होंने लाहौर और अमृतसर में महिलाओं के प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए, जिसके लिए उन्हें गिरफ्तार किया गया। राजनीतिक कैदियों के साथ किया जाने वाला व्यवहार अपमानजनक था। इसलिए, उन्होंने सत्यवती के साथ मिलकर जेल में प्रदर्शन आयोजित करने का फैसला किया। वे 9 अक्टूबर, 1942 को जेल के गेट पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने में सफल रहीं। इससे जेल अधिकारी नाराज हो गए और इन दोनों महिलाओं को अंबाला जिला जेल में स्थानांतरित कर दिया गया।

पुष्पा गुजराल

पुष्पा गुजराल पंजाब की एक और महिला हैं जिन्होंने 1942 के आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई थी। राजनीतिक कार्यों में उनकी रुचि 1919 में शुरू हुई, लेकिन वे 1930 के आंदोलन के दौरान ही सक्रिय हुईं। इस समय उन्हें शहर और जिला कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष चुना गया। उन्होंने राजनीतिक कैदियों के परिवारों के लिए धन एकत्र किया।

पुष्पा गुजराल 1940 में सत्याग्रह के लिए पहली बार जेल गईं और उन्हें छह महीने की सजा सुनाई गई। वर्ष 1942 में प्रसिद्ध भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित हुआ और परिवार फिर से सक्रिय हो गया। पुष्पा को पूरे परिवार के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें छह महीने की सजा सुनाई गई। पुष्पा गुजराल पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी (महिला) की संयोजक बनीं और कई अन्य सामाजिक कार्य एजेंसियों से भी जुड़ी रहीं। वह पंजाब राज्य सामाजिक कल्याण सलाहकार बोर्ड की सदस्य हैं।

कल्पना दत्ता

कल्पना, जिन्हें 1932 में अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए गिरफ्तार किया गया था, 1937 में रिहा हुईं, जब देश में प्रांतीय स्वायत्तता लागू हुई। उनकी रिहाई के लिए रवींद्रनाथ टैगोर, सीएफ एंड्रयूज और महात्मा गांधी ने विशेष प्रयास किए। मिदनापुर जेल में गांधीजी ने उनसे मुलाकात की। अपनी पुस्तक चटगांव आरमरी रेडर्स रिमिनिसेंस में अपने बारे में लिखते हुए उन्होंने कहा: "गांधीजी मुझसे प्रेसीडेंसी जेल में मिलने आए थे। कल्पना ने स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। इस समय तक द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया था, अधिकारियों ने उन्हें चौबीस घंटे के भीतर कलकत्ता छोड़ने का आदेश दिया और उन्हें चटगांव में उनके घर में नजरबंद कर दिया। इस समय उनकी गतिविधियाँ पार्टी के गुप्त कार्य को आगे बढ़ाना और इसके कुशल संचालन को देखना था। इसमें सभी प्रांतीय समिति और केंद्रीय समिति के परिपत्रों, पुस्तकों और पत्रों को विभिन्न क्षेत्रों में भेजना, शहर में

आश्रय और डंप को ठीक करना, पर्चे बांटने आदि का आयोजन करना शामिल था। 1941 में उनकी गतिविधि पर प्रतिबंध हटा दिए गए।

अनसूयाबाई काले

अनसूयाबाई काले की सार्वजनिक कार्यों में रुचि 1920 में शुरू हुई जब उन्होंने भगिनी मंडल नामक महिला संगठन का गठन किया। बाद में वे अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की सक्रिय सदस्य रहीं। अनसूयाबाई काले 1928 में मध्य प्रांत विधानमंडल की सदस्य बनीं और इसकी उपाध्यक्ष रहीं - एक ऐसा पद जिससे उन्होंने 1930 में नमक सत्याग्रह के सिलसिले में गांधीजी की गिरफ्तारी के विरोध में इस्तीफा दे दिया। 1937 में जब लोकप्रिय मंत्रिमंडल स्थापित हुआ तो अनसूयाबाई मध्य प्रदेश विधानमंडल की उपाध्यक्ष बनीं। द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में कांग्रेस की नीति के चलते उन्हें फिर से इस पद से इस्तीफा देना पड़ा। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वे सक्रिय राजनीति के क्षेत्र में आईं। उनके प्रयासों के कारण ही 1942 के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अष्टमी चिमूर अध्याय से जुड़े पच्चीस युवकों की जान बच पाई। भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद अनसूयाबाई केंद्रीय विधानमंडल की सदस्य बनीं।

कमला देवी चट्टोपाध्याय

नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लेने वाली कमला देवी ने अब फिर से आंदोलन में अपनी जगह बना ली है। दरअसल, सत्याग्रह सेना की यह सिपाही कभी थकी नहीं और पूरे समय अपना काम जारी रखा। 1939 से 1944 के बीच अपने राजनीतिक कार्यों के लिए उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया। उन्होंने भारत की वास्तविक परिस्थितियों से वहां के लोगों को परिचित कराने के उद्देश्य से अमेरिका का दौरा किया।

भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद कमला देवी की रुचि राजनीति से हटकर सहकारी आंदोलन की ओर हो गई। उन्होंने भारतीय सहकारी संघ को प्रायोजित किया। उन्होंने देश भर के रंगमंच संगठनों के संघ, थिएटर सेंटर ऑफ इंडिया की स्थापना की। उन्हें 1955 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। कमला देवी वर्तमान में अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड की अध्यक्ष हैं। देश के पारंपरिक कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित करने में उनका योगदान बहुत बड़ा रहा है।

मीराबेन (मेडेलीन स्लेड)

मेडेलीन स्लेड ने राजनीतिक संघर्ष में सक्रिय रूप से भाग नहीं लिया, लेकिन भारत की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने समर्थन दिया। वह सर एडमंड स्लेड की बेटी थीं और उनका जन्म 1892 में हुआ था। वह ग्रेट ब्रिटेन के एक कुलीन परिवार से थीं। मेडेलीन स्लेड की शिक्षा अच्छी थी, लेकिन उन्होंने अपनी रुचियां बहुत बार बदलीं। वर्ष 1923 में वह पेरिस चली गईं और "उन दिनों वह बिना सोचे-समझे विलासिता का जीवन जी रही थीं

खुशीद बहन

1930 में स्वयंसेवी सेना की एक प्रसिद्ध संगठक खुशीद बहन 1940 में उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत में लोगों के बीच अहिंसा का संदेश फैलाने गईं। वह गांव-गांव गईं, पठानों, पीरों, मलिकों और खानों से मिलीं और उन्हें अपहरण की क्रूरता के बारे में बताया। वह हिंदू समुदाय के लोगों से मिलीं और उनमें साहस और बहादुरी

की भावना का संचार किया। वर्ष के अंत में वह वालो तांगी नामक एक आदिवासी क्षेत्र में जाना चाहती थीं और उन्होंने सीमा पार करने के लिए सरकार से अनुमति मांगी। जब सरकार ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी तो उन्होंने सरकार को सीमा पार करने के अपने इरादे से अवगत कराया।

उषा मेहता

बंबई रेडियो के माध्यम से संघर्ष जारी रहा। उषा मेहता कांग्रेस रेडियो षडयंत्र केस की प्रमुख कार्यकर्ताओं में से एक थीं। उषा का झुकाव कांग्रेस अधिवेशन की ओर था, लेकिन इस बार जब प्रसिद्ध भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित हुआ तो वह मौजूद थीं और इस महत्वपूर्ण निर्णय की साक्षी थीं। इस प्रस्ताव को सफल बनाने के लिए कुछ करने की उनकी बहुत इच्छा थी। विदेशी कपड़ों की दुकानों और शराब की दुकानों पर धरना देना उन्हें नापसंद था। वह कुछ अलग करना चाहती थीं।

उषा मेथा का सपना तब साकार हुआ जब कुछ दोस्तों ने एक गुप्त संचार स्टेशन चलाने का फैसला किया। "यह मुझे बेहद पसंद आया और मैंने इस विचार को अपनाया और अपने पिता के कड़े विरोध के बावजूद आंदोलन में कूद पड़ी, जो एक सरकारी कर्मचारी होने के नाते मेरे विचार को स्वीकार नहीं करते थे और चाहते थे कि मैं अपनी शिक्षा पूरी करूं।

कस्तूरबा गांधी

बम्बई ने एक शहीद की मृत्यु देखी। कस्तूरबा गांधी, जिन्होंने गांधीजी के साथ स्वतंत्रता संग्राम की ज़िम्मेदारियों को साझा किया था, 24 फरवरी, 1944 को एक कैदी के रूप में मर गईं। उन्हें आवश्यक चिकित्सा सहायता भी नहीं मिल सकी। गांधीजी द्वारा बहुत सारे पत्राचार के बाद उनकी पसंद के चिकित्सकों को उनकी देखभाल करने की अनुमति दी गई।

हंसा मेथा

हंसा मेहता बचपन में ही स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ी थीं। उस समय के नेताओं से बहुत प्रेरित होकर उन्होंने पूरे भारत की यात्रा की, महिलाओं से मिलकर उनमें जागरूकता पैदा की। हालाँकि, ब्रिटिश सरकार को यह पसंद नहीं आया। 30 अगस्त, 1930 के अभ्युदय में रेलवे अधिकारियों द्वारा की गई चाल के बारे में बताया गया कि उन्होंने कमला नेहरू और हंसा मेथा के दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आने पर 'इकलाब जिंदाबाद' के नारे लगाने वालों की आवाज़ दबाने के लिए इंजन भेजे थे। इंजनों को बिना रुके सीटी बजाने के लिए बनाया गया था।

मृदुला साराभाई

मृदुला साराभाई एक प्रसिद्ध राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ता थीं। वह अहमदाबाद के बेहद अमीर उद्योगपति और परोपकारी सरला और अंबालाल साराभाई की बेटी थीं। वह 1927 में स्वतंत्रता संग्राम में एक प्रमुख कार्यकर्ता बन गईं। अपने समय के अन्य लोगों की तरह, वह गांधीजी के संदेश से बहुत प्रभावित हुईं और नमक सत्याग्रह (1930), राजकोट सत्याग्रह (1938) में भाग लिया और कई बार जेल गईं। उन्होंने 1946 में आईएनए ट्रायल के दौरान सक्रिय रूप से काम किया। उन्होंने 1947 में भारत के विभाजन के बाद देश को हिला देने वाले सांप्रदायिक दंगों के दौरान अपहृत महिलाओं की बहाली में सराहनीय भूमिका निभाई।

सुचेता कृपलानी

सुचेता कृपलानी की राजनीति में रुचि तब से है जब वे 1934 में बनारस विश्वविद्यालय में लेक्चरर थीं। अखिल भारतीय कांग्रेस के तत्कालीन महासचिव आचार्य जेबी कृपलानी से उनकी शादी ने उनकी रुचि को और बढ़ा दिया। उन्होंने बनारस विश्वविद्यालय में अपनी नौकरी छोड़ दी और राजनीतिक गतिविधियों में उतर गईं। 1940 में कांग्रेस द्वारा व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया गया और वह उन चुनिंदा लोगों में से एक थीं जिन्हें इस सत्याग्रह में भाग लेने की अनुमति दी गई और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जब वह जेल से बाहर आईं, तब तक एक और आंदोलन चल रहा था। ज्यादातर नेता जेल में थे। उन्होंने पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करना उचित नहीं समझा और भूमिगत हो गईं। अपनी गतिविधियों को जारी रखने के लिए उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन वे पुलिस की गिरफ्तारी से बच निकलीं।

श्रीमती अरुणा आसफ अली

अरुणा स्वतंत्रता सेनानियों की सेना की एक उत्साही सिपाही थीं। नमक सत्याग्रह के दिनों में वे प्रमुख हो गईं। वे सभाओं को संबोधित करती थीं, नमक बनाती थीं और जुलूसों का नेतृत्व भी करती थीं। दिल्ली के मुख्य आयुक्त उनकी गतिविधियों से बहुत चिंतित थे। परिणामस्वरूप, उन्होंने उन पर राजद्रोह के लिए नहीं बल्कि "आवारागर्दी करने के लिए मुकदमा चलाया, जिसके पास आजीविका का कोई प्रत्यक्ष साधन नहीं था।" उन्हें अच्छे आचरण के लिए सुरक्षा देने के लिए कहा गया, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया। अरुणा को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें एक वर्ष के कारावास की सजा सुनाई गई। कुछ महीने बाद गांधी-इरविन युद्धविराम समझौते के तहत अधिकांश राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दिया गया।

निष्कर्ष

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अधूरा रहेगा यदि इसमें देश की आजादी के लिए महिलाओं के योगदान को शामिल न किया जाए। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कई महिलाओं ने वीरतापूर्ण भूमिका निभाई। हजारों भारतीय महिलाओं ने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। भारत को उसकी स्वतंत्रता दिलाने वाले अहिंसक आंदोलन ने न केवल महिलाओं को साथ लिया बल्कि इसकी सफलता महिलाओं की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर थी। स्वदेशी आंदोलन के लिए महिलाओं ने अपनी सोने की चूड़ियाँ, नाक की बालियाँ, कंगन और अन्य सामान दान कर दिए। ग्रामीण क्षेत्रों में हर दिन भोजन का एक छोटा हिस्सा इस उद्देश्य के लिए अलग रखा जाता था। अंत में हम कह सकते हैं कि पिछले पचास वर्षों में, महिला आंदोलन परिपक्व हो गया है और उसने अन्य आंदोलनों जैसे कि व्यापारी संघों, पर्यावरण आंदोलनों और अन्य प्रगतिशील आंदोलनों के साथ अपने संबंधों को उत्तरोत्तर गहरा किया है।

संदर्भ

1. मिश्रा वसुंधरा, डार मोहम्मद अशरफ। नर्वस नाइनटीज (1857-1947): स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिलाओं की भागीदारी के विशेष संदर्भ में। 2023;29:55-60।
2. गनी ज़ाहिद, सिसोदिया शांति। भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गुमनाम नायिकाएँ। अमेरिकन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ

- सोशल साइंस रिसर्च। 2020;5:19-25। doi:10.46281/aijssr.v5i2.515।
3. एन. मल्लैया। स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान: मध्य कर्नाटक पर ध्यान केंद्रित। जर्नल फॉर रीअटैच थेरेपी एंड डेवलपमेंटल डायवर्सिटीज़। 2021;4। doi:10.53555/jrtdd.v4i2.3077।
4. शंकर बिकलेंदु, कुमार मनीष। बिहार के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी का एक अध्ययन। शोधकोश: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स। 2023;4। doi:10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.2740।
5. भट रशीद। गांधीवादी चरण: महिला समितियाँ और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका। 2022;26-29। doi:10.55529/jwes.21.26.29।
6. नज़ीर तहसीना, भट शाज़िया, लेक्सार्चस प्रकाशक। भारतीय राजनीतिक विचार को आकार देने में महिलाओं की भूमिका: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। 2024;2:23-30।
7. औड्ड्या बिप्लब। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी। 2021। doi:10.5281/zenodo.5594359।
8. चतुर्वेदी नीकी। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं का इतिहास और पारिवारिक स्मृतियों और अंतरंग यादों की भूमिका। जिज्ञासा। 2023;खंड XXX:84-93।
9. कुमार पी, नागेश्वरी एस, सरवनन। तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली जिले के विशेष संदर्भ में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गुमनाम महिला नायक। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नॉवल रिसर्च इन इंजीनियरिंग एंड फार्मास्युटिकल साइंसेज। 2025।
10. वेंकटरमन वी। राष्ट्रीय राजनीति और स्वतंत्रता संग्राम में महिलाएँ। 2018।
11. वेंकटरमन वी, लिट डी। राष्ट्रीय राजनीति और स्वतंत्रता संग्राम में महिलाएँ। एसएसआरएन इलेक्ट्रॉनिक जर्नल। 2017;12। doi:10.2139/ssrn.3132149।
12. मित्रा अतनु। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं और व्यावसायिक यौनकर्मियों की भूमिका। अंत्यजा: भारतीय महिला और सामाजिक परिवर्तन पत्रिका। 2022;7:245563272211397। doi:10.1177/24556327221139703।
13. जोशी सुमन। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उत्तराखंड की महिलाओं की भूमिका: एक ऐतिहासिक अध्ययन। 2021।
14. कंबाला यामिनी। भारत में विभिन्न अवधियों में महिलाओं की स्थिति। जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च। 2022;1(2)। doi:10.37022/tjmdr.v1i2.281।
15. कुमारी जुन्नै। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार की महिला स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान। 2024।

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.